महानगर के बेसहारा बूढ़ों के लिए वरदान है सीएमआईजी

निज प्रतिनिधि

कोलकाता, ५ दिसम्बर। कलकत्ता मेट्रोपालिटन आफ जेरोंटोलाजी (सीएमआईजी) नाम का एक गैर सरकारी संगठन कोलकाता में दो स्थानों पर बेसहारा लोगों की देखभाल का केन्द्र चलाता है। ६६ वर्षीय मंगल सांतरा ने बताया कि १९८८ में उसके बेटे की मृत्यु के बाद उसके एवं उसकी बहू के पास जीविका चलाने का कोई साधन नहीं था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसके सिर पर दुखों का पहाड़ गिर पड़ा है तथा पैरों के नीचे की जमीन खिसक गयी है। परंतु इस बीच उसे एक ऐसा स्थान मिला जहां उसे प्यार के साथ-साथ पैसा कमाने के लिए कुछ काम मिला। बेलियाघाटा तथा ईएम बाईपास पर स्थित दो देखभाल केन्द्रों में १०० से भी अधिक महिलायें हैं जिनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। मंगल इन सारी महिलाओं में सबसे वृद्धा हैं। उसका कहना है कि यह संस्था मेरे लिए भगवान के उपहार के समान हैं। वृद्धा एवं परित्यक्त लोगों की सहायता के उद्देश्य से स्थापित सीएमआईजी गरीब लोगों को पौष्टिक भोजन, मुफ्त में चिकित्सीय उपचार एवं दवा प्रदान करता है। सीएमआईजी के अध्यक्ष इन्द्राणी चक्रवर्ती का कहना है कि वृद्ध लोगों को राहत एवं सहायता प्रदान करने के लिये सीएमआईजी की स्थापना की गयी थी। इसके साथ ही इसका उद्देश्य वृद्धा को सक्रिय नागरिक बनाना तथा उनमें विश्वास पैदा करना है। चक्रवर्ती ने कहा कि मेरा पालन पोषण मेरे दादा-दादी ने किया। लोग वृद्धावस्था में कुछ काम करना चाहते हैं उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की तलाश रहती है जो उनसे बातें कर सकें। दूसरी तरफ अन्य लोग हमेशा अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। उन्होंने बताया कि यहां की महिलायें प्रतिदिन ७० से ८० ठोंगा बनाकर पास के दुकानों में बेचती है जिससे उन्हें हर रोज ४ रुपये की कमाई होती है। यह राशि कुछ नहीं है परंतु इससे कम से कम उन्हें इतनी संतुष्टि होती है कि वे अपने लिए संघर्ष कर रहे लोगों की थोड़ी सी मदद कर रहे हैं। वृद्धाओं को यहां एक नई खुशी मिली है। बीच बीच में उन्हें बाहर घुमाने भी ले जाया जाता है। कल उन्हें बेलूर ले जाया गया परंतु इनमें ज्यादातर तीर्थ स्थानों पर जाना चाहती हैं। इनके मनोरंजन के लिये टेलीविजन एवं कंप्यूटर रखा गया है। ६९ वर्षीय निभा रे, जो यहां अपने भतीजे के साथ रहती हैं, ने कहा कि मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं दोबारा टेलीविजन देख पाऊंगी। जब हमलोग घर जाते हैं तो हमें बहुत दुख होता है। क्योंकि हमारे घर में टेलीविजन नहीं है। एक अन्य महिला ने कहा कि मुझे यहीं अच्छा लगता है घर जाने की इच्छा नहीं होती है। चक्रवर्ती ने कहा कि यहां उनलोगों के लिये कंप्यूटर भी है जिनलोगों ने सेवा निवृत्ति के पहले इसका इस्तेमाल करना सीखा था। चक्रवर्ती ने बताया कि गैर सरकारी संगठन का एक दल उनलोगों को चुनता है जिन्हें ३ किलोमीटर परिधि की दूरी तक बाहर ले जाया जा सके। सिर्फ उन्हीं लोगों को चुना जाता है जो दोबारा केन्द्र में वापस आ सकें। किसी को भी ४ घंटे से अधिक बाहर रहने की अनुमति नहीं है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक केन्द्र में महिलाओं को रखने की संख्या सीमित है। एक केन्द्र में केवल ५० लोगों को रखा जाता है। अगर कोई वापस चला जाता है या किसीकी मृत्यु हो जाती है तो उसी प्रक्रिया को दोहराकर रिक्त स्थान की पूर्ति की जाती है।